श्री गुरू गोविन्द सिंह जी द्वारा स्थापित खालसा पंथ के 549 वें स्थापना–दिवस–समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–13.04.2017, समय–12:40 बजे, स्थान–गाँधी नगर, मोतिहारी)

श्री गुरू गोविन्द सिंह जी द्वारा स्थापित खालसा पंथ के स्थापना–दिवस –समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी, विधायक श्री प्रमोद कुमार जी, गुरूद्वारा श्री गुरू सिंघ सभा के अध्यक्ष श्री सत्यपाल सिंह छाबड़ा जी, गुरूद्वारा कमिटी के सभी पदाधिकारीगण, आगत अतिथिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

वैशाखी गुरूपर्व के पावन अवसर पर आज मोतिहारी के श्री गुरूसिंघ सभा गुरूद्वारे में आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मैं आप सबको वैशाखी गुरूपर्व के अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामना देता हूँ। प्रत्येक वर्ष 13 अप्रैल वैशाखी के दिन खालसा–पंथ का जन्म दिवस मनाया जाता है। इसी दिन 1699 ई॰ में श्री गुरू गोविन्द सिंह जी ने खालसा–पंथ की स्थापना की थी। इस पर्व के अवसर पर किसान अपने घर में नयी फसल और धन–धान्य को देखकर फूला नहीं समाता है और प्रसन्न होता है। भक्तजन इस दिन को धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानते हुए स्नान, पूजा–पाठ इत्यादि करते हैं। किन्तु, मात्र इतना ही महत्त्व इस दिन का नहीं है। इस राष्ट्रीय पर्व के पीछे विश्व के इतिहास की एक महान घटना का समावेश है और उसकी याद में भी हम इस त्योहार को आयोजित करते हैं। सन् 1699 का वैशाखी का दिन इतिहास का वह अनूठा दिन है, जिस इस दिन एक पंथ ने नहीं, अपितु एक नये समाज ने जन्म लिया और उसकी नींव रखी गई। इसी दिन सिखों के दशमेश गुरू गोविन्द सिंह ने भारतीय समाज कुप्रथा–जातिवाद पर एक प्रबलतम प्रहार किया और मानवतावाद की दिशा में अपना आदर्श स्थापित किया। सदियों

से अभिवंचित, त्रस्त और अंधविश्वास की बेड़ियों में जकड़े हुए इंसान को उन्होंने मनोवैज्ञानिक झटका दिया। व्यक्ति की तलवार की धार पर परीक्षा ली। उसके खून में व्याप्त गलीज मान्यताओं के मवाद की शल्य–चिकित्सा की और उसमें आमूल परिवर्तन कर, एक अभिनव दिशा का दिग्दर्शन किया। गुरू जी कहते हैं–

''याही काज धरा हम जनमम्।

समझ लेहु साधु सब मनमम्।।

धर्म चलावन संत उबारन।

दुष्ट समन का मूल उपारन।।''

अपने जीवन के उद्देश्य को कार्यरूप में परिणत करने के लिए गुरू जी ने 13 अप्रैल सन् 1699 के दिन भारत के विभिन्न प्रदेशों से आये गुरूभक्तों के समक्ष एक नये समाज की नींव डाली। गुरूदेव पर स्वयं को न्योछावर करने वाले पाँच वीरों को गुरूजी ने ''पंज प्यारा'' कहा और सामाजिक विभेदों से ऊपर उठाकर एक बर्तन में अमृत–पान कराया। एक बर्तन में पान करने से उनका जाति–वैषम्य समाप्त हुआ। उनके आत्मबल से गुरू ने प्रसन्न होकर अपनी कृपा द्वारा उन्हें अजर–अमर बनाया और खालसा का केश, कंघा, कृपाण, कच्छा और कड़ा धारण कराकर एक अनुशासन के सूत्र में बांधा। गुरूजी ने खालसा–पंथ के माध्यम से जिस मानव–समाज का सृजन किया, उससे न केवल सम्पूर्ण सिख–पंथ, बल्कि समूचा राष्ट्र गौरवान्वित हुआ।

हमलोगों ने पिछले पूरे वर्ष भर गुरू गोविन्द सिंह जी का '350वाँ प्रकाश–पर्व' आयोजित किया। इसके समापन–समारोह में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी पटना आए थे। राज्य सरकार और केन्द्र सरकार ने मिलकर 'प्रकाशपर्व' का बड़ा भव्य आयोजन पाटलिपुत्र की धरती पर किया। पूरी दुनियाँ से सिख धर्म अनुयायी पहुँचे और सबने पूरे

बिहारवासियों की सत्कार और सेवा–भावना की प्रशंसा की। मित्रों, यही बिहार की खूबी है। आखिर इस धरती को गुरू गोविन्द सिंह जी की जन्मभूमि होने का गौरव यों ही नहीं प्राप्त है। इस धरती पर गुरूजी की वीर, विद्वान, कवि, दार्शनिक, कला–मर्मज्ञ, राष्ट्रभक्त अमृत–संतानें निवास करती हैं–यही कारण है कि बिहार का राष्ट्रीय नव–निर्माण में सदैव महत्त्पूर्ण योगदान रहा है।

आज 'खालसा–पंथ' के 549वें स्थापना दिवस के पावन अवसर पर मैं गुरू गोविन्द सिंह जी को अपनी श्रद्धा और भक्ति के पुष्प अर्पित करता हूँ और यह कामना करता हूँ कि उनके संदेशों से हम सदैव अभिप्रेरित होते रहें। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।